Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2016 = 4.44, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.48612, DEC-JAN 2018, VOL- 5/25

Dr.RajenderKumar

Dean Faculty of Education Tantia University SriGanganagar

ततीय श्रेणी अध्यापकों की अपने व्यवसाय में अभिरूचि एवं संतष्टि का अध्ययन''

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

:–

प्रस्तुत शोध में किये गये कार्य को सारांश रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रत्यक अध्याय में किये गये कार्य को सार रूप में निम्न प्रकार दर्शाया गया है :–

प्रथम अध्याय में शोध कार्य की प्रस्तावना देते हुए समस्या कथन दिया गया है, शोध अध्ययन की रूपरेखा बताते हुए इस दिशा में अध्ययन के शैक्षिक महत्व के साथ–साथ समस्या की आवश्यकता एवं औचित्य को भी भली–भॉति स्पष्ट किया गया है। अध्यापकों की अपने व्यवसाय के प्रति अभिरूचि एवं संतुष्टि का अध्ययन किया गया है। क्योंकि अध्यापक अगर अपने व्यवसाय से संतुष्टि नहीं होंगे तो उनकी पढ़ाने में भी रुचि नहीं रहेगी जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिणक उपलब्धता पर प्रभाव पड़ेगा। यदि अध्यापक अपने व्यवसाय से संतुष्ट है और रुचि के साथ पढ़ाते है, तो निश्चित रूप से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास सम्भव हो सकेगा।

प्रस्तुत शोध कार्य मुख्यत: निम्न उद्देश्यों को लेकर किया गया है; जो निम्न है :–

मुख्य उद्देश्यों :–

1. सरकारी एंव निजी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का अध्ययन करना।

1. सरकारी एंव निजी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का अध्ययन करना।

गौण उद्देश्यो :–

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

1. ग्रामाणी एवं शहरी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का अध्ययन करना।
2. ग्रामाणी एवं शहरी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का अध्ययन करना।
3. सरकारी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी महिला एवं पुरूष अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि एवं अभिरूचि का अध्ययन करना।
4. निजी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी महिला एवं पुरूष अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि एवं अभिरूचि का अध्ययन करना।
5. सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी महिला एवं पुरूष अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि एवं अभिरूचि का अध्ययन करना।
6. सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी महिला एवं पुरूष अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि एवं अभिरूचि का अध्ययन करना।

उपरोक्त शोधारित उद्देश्य को अधोलिखित परिसीमाओं के अन्तर्गत अध्ययन किया गया हैं।

प्रस्तुत शोध का परिसीमन :–

1. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु श्री गंगानगर जिले को चुना गया है।

2. प्रस्तुत शोध हेतु श्री गंगानगर जिले में कार्यरत तृतीय श्रेणी अध्यापकों को ही चुना गया है।

3. इस अध्ययन में 120 सरकारी एवं 120 निजी अध्यापकों को सम्मिलित किया गया है।

4. प्रस्तुत अध्ययन कार्य हेतु 60 सरकारी शहरी एवं 60 निजी शहरी, 60 सरकारी ग्रामीण एवं 60 निजी ग्रामीण अध्यापकों को सम्मिलित किया गया है।

5. महिला एवं पुरूष अध्यापकों के प्रभाव के अध्ययन हेतु 120 महिला अध्यापक एवं 120 पुरूष अध्यापको को चुना गया है।

शोध में प्रयुक्त परिभाषिकरण शब्दावली के रूप में व्यवसाय, संतुष्टि अभिरुचि एवं तृतीय श्रेणी अध्यापक का अर्थ दिया गया है। उद्देश्य व परिसीमन

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

निरूपण के पश्चात शोध परिकल्पना का निर्माण किय गया ह। ये निम्नलिखित हैः–

1. सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. सरकारी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी महिला एवं पुरूश अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
6. निजी विद्यालयों में कार्यरत त तीय श्रेणी महिला एवं पुरूष अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
7. सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी महिला अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
8. सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी पुरूष अध्यापकों की अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

द्वितीय अध्याय में सम्बन्धित साहित्य का अर्थ बताते हुए साहित्य सर्वेक्षण के कार्य, उद्देश्य, महत्व, लाभ व स्त्रोत बताये गये है। सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण दो भागों में विभाजित किया गया है।

1. व्यावसायिक संतुष्टि से सम्बन्धित साहित्य।
2. व्यावसायिक अभिरूचि से सम्बन्धित सहित्य।

तृतीय अध्याय में अनुसंधान का अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य व विधियों के बारे में बताया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। शोध में प्रयुक्त सर्वेक्षण विधि का अर्थ, परिभाषा, उदेश्य, विशेषताएॅ, गुण, महत्व एवं सोपान बताएॅ है। सर्वेक्षण विधि सम्पूर्ण समष्टि का अध्ययन करना आवश्यक है, यह तथ्य व्यावहारिक नही है। अतः अनुसंधान के विश्वसनीय व सुविधाजनक अध्ययन हेतु न्यादर्श की आवश्यकता पड़ी। शोध में न्यादर्श के महत्व को देखते हुए शोध न्यादर्श की परिभाषाएॅ, आवश्यकताएॅ, विशेषाएॅ

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आदि को बताया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श चुनाव हेतु यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध हेतु श्री गंगानगर जिले के 240 अध्यापकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। जिसमें सरकारी एवं निजी विद्यालय के अध्यापक एवं शहरी, ग्रामीण, पुरूष एवं महिला अध्यापकों को लिया गया है।

तृतीय अध्याय में ही शोध में प्रयुक्त उपकरणों का विवरण दिया गया हैं प्रस्तुत अध्ययन में मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

1. **प्रमोद कुमार द्वारा निर्मित :– "Teacher job – satisfaction Questionnaire"**
2. **डा्. एस.पी. कुलश्रेष्ठ (देहरादून)** द्वारा निर्मित :– '' व्यावसयिक रूचि प्रपत्र''

उपकरणों के पश्चात् शोध के चरण बताये गये है। शोध में दो चरणो में कार्य किया गया है।

1. **दत्तो का एकत्रीकरण**
2. **दत्तो का सारणीयन**

तृतीय अध्याय में ही सटीक निष्कर्ष निकालने के लिए निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया :–

1. **मध्यमान**
2. **मानक विचलन**
3. **टी–मान**

चतुर्थ अध्याय में सारणीक त आंकड़ों पर सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर प्रत्येक परिकल्पना को क्रम से जॉचा गया है व विश्ले ाण किया गया है।

शोध निष्कर्ष :–

प्रत्येक शोध में तथ्यों के आधार शोधकार्य को अन्तिम स्वरूप प्रदान करने के लिए निष्कर्ष व परिणाम प्राप्त किये जाते है। बहुत अधिक तथ्यों के आधार पर यह कठिन हो जाता है, कि उन्हे सारांश प्रदान कर उचित निर्णय लिये जाएॅ । किसी भी कार्य का सार्थक परिणाम उसका निष्कर्ष होता है, इसके अभाव में कार्य का प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता है, जिस प्रकार एक माली (शिक्षक) लगन व मेहनत से पौधे (शिक्षार्थी) की परवरिश कर फल (उच्च

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शैक्षिक उपलब्धि) की कामना करता है, उसी प्रकार शोध रूपी पौधे का फल निष्कर्ष होता है। प्रस्तुत शोध कार्य में ''**तृतीय श्रेणी अध्यापकों की अपने व्यवसाय में अभिरुचि एवं संतुष्टि का अध्ययन**'' किया गया। अध्ययन के निर्धारित उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु संकलित दत्त विश्लेशण एवं निर्वचन की प्रक्रिया से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए है। :–

1. प्रस्तुत शोध में पाया गया कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों मे कार्यरत तृतीय श्रेणी अध्यापकों की अपने अध्यापन विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक अपने व्यवसाय से बहुत अधिक संतुष्टि है जबकि निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं है । क्योंकि निजी विद्यालयों के अध्यापकों की नौकरी भी स्थायी नहीं है और उन्हें कार्य के अनुरूप वेतन भी नहीं दिया जाता है, निजी संस्थाएँ अपने कार्यरत अध्यापकों का आर्थिक शोषण करती है।

2. प्रस्तुत शोध में पाया गया कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों मे कार्यरत तृतीय श्रेणी अध्यापकों की व्यावसायिक अभिरूचि के में सार्थक अन्तर नहीं होता है। तृतीय श्रेणी के अध्यापक चाहे सरकारी विद्यालयों में कार्यरत हो या निजी विद्यालयों में उनकी व्यावसायिक अभिरूचि में अन्तर नहीं होता है। उनकी अभिरूचि सभी क्षेत्रों में समान स्तर की है।

3. प्रस्तुत शोध में पाया गया है, कि तृतीय श्रेणी अध्यापक शहरी क्षेत्र में कार्यरत हो या ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत हो उनकी व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है दोनों ही क्षेत्रों में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसयिक संतुष्टि समान (टी–1.14) स्तर की है।

4. प्रस्तुत शोध के निष्कर्षो में पाया गया कि तृतीय श्रेणी के अध्यापक शहरी क्षेत्र में कार्यरत हो या ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत हो उनकी व्यावसायिक अभिरूचि (साहित्यिक, वैज्ञानिक, कलात्मक, गृहकार्य) समान स्तर की होती है, अर्थात उनकी अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

5.1 प्रस्तुत शोध में पाया गया कि सरकारी पुरूष अध्यापकों की अपेक्षा सरकारी महिला अध्यापक अपने व्यवसाय से अधिक संतुष्ट है, क्योंकि सरकार महिला अध्यापक जहॉ Attitude towards Profession, Attitude towards working condidtions के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखती है, पुरूष अध्यापक इनके प्रति उतने संतुष्ट नहीं है, जबकि ˙Attitude towards authority & Attitude

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

towards institution के प्रति लगभग समान दृष्टिकोण रखते है। इसलिए इनकी व्यावसायिक संतुष्टि में अतंर है।

5.2 प्रस्तुत शोध में पाया गया कि सभी 10 क्षेत्रों से सम्बन्धित अभिरूचियों में सरकारी महिला एवं सरकारी पुरूष अध्यापकों में सार्थक अन्तर है। महिला एवं पुरूष अध्यापकों की साहित्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, वाणिज्यिक, रचनात्मक कृषि सम्बन्धी व्यवसायों में सार्थक अन्तगर नहीं है। सरकारी महिला एवं पुरूष अध्यापकों की कलात्मक एवं प्रवर्तक क्षेत्र में व्यावसायिक अभिरुचि में बहुत कम अन्तर है जबकि सामाजिक एवं गृहकार्य क्षेत्रों में सरकारी महिला एवं पुरूष अध्यापकों की अभिरुचि में टी = 10.2 अन्तर है, क्योंकि पुरूष अध्यापक गृहकार्य में रुचि नहीं लेते है, जबकि महिला अध्यापक गृहकार्य सम्बन्धी सभी व्यवसायों में कार्य करने की इच्छुक रहती है।

6.1 प्रस्तुत शोध में पाया गया कि निजी अध्यापक एवं निजी महिला अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर होता है। महिला अध्यापक अपने व्यवसाय से पुरुषो की तुलना में कम संतुष्ट है। क्योंकि वे अपने व्यवसाय Attitude towards working condidtions, Attitude towards authority & Attitude towards institution के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखती है।

6.2 निजी विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष अध्यापकों की साहित्यिक (L), वाणिज्यिक(c), कृषि सम्बन्धी (AG), एवं प्रवर्तक क्षेत्रों से सम्बन्धित अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है। वैज्ञानिक (Sc), अभिरूचि में थोड़ा सा अन्तर है। जबकि प्रशासनिक (E), रचनात्मक (CO), कृषि सम्बन्धी (AG), सामाजिक (S), एवं गृहकार्य (H), क्षेत्रों से सम्बन्धित अभिरूचि में सार्थक अन्तर है। गृहकार्य अभिरूचि में टी–12.12 अन्तर है। क्योकि महिला अध्यापक गृहकार्य सम्बन्धी व्यवसाय में बहुत अधिक रूचि रखती है, जबकि पुरूष अध्यापक गृहकार्य में रूचि नहीं रखते है।

7.1 सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापकों की व्यावसायिक संतुि ट में सार्थक अन्तर है।क्योकि निजी विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापक सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की अपेक्षा कम संतु ट है। क्योकि वे अपने व्यवसाय के Attitude towards working condidtions, Attitude towards authority & Attitude

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

towards institution के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखती है। एवं अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं है।

7.2 सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापकों की साहित्यिक (L), वैज्ञानिक (Sc) वाणिज्यिक(c), प्रशासनिक(E), रचनात्मक (CO), कलात्मक(A) कृषि सम्बन्धी (AG), एवं प्रवर्तक(P),सामाजिक (S), गृहकार्य (H), क्षेत्रों से सम्बन्धित व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है। वैज्ञानिक (Sc), अभिरूचि में थोड़ा सा अन्तर है। जबकि प्रशासनिक (E), रचनात्मक (CO), कृषि सम्बन्धी (AG), सामाजिक (S), एवं गृहकार्य (H), क्षेत्रों से सम्बन्धित अभिरूचि में सार्थक अन्तर है। इन सभी क्षेत्रों में सरकारी एवं निजी महिलाओं की रूचि समान स्तर की है।

8.1 सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत तृतीय श्रेणी पुरूष अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।क्योकि निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष अध्यापक अपने व्यवसाय संतुष्ट नहीं है। क्योकि निजी विद्यालयों की अध्यापक Attitude towards Authority,Attitude towards institution के प्रति संतुष्टि नही है, क्योकि उनकों अपने कार्य के अनुरूप प्रतिपुष्टि नहीं मिल पाती है।

8.2 सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष अध्यापकों की साहित्यिक (L), वैज्ञानिक (Sc) वाणिज्यिक(c), प्रशासनिक(E), रचनात्मक (CO), कलात्मक(A) कृषि सम्बन्धी (AG), एवं प्रवर्तक(P),सामाजिक (S), गृहकार्य (H), क्षेत्रों से सम्बन्धित व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है। सरकारी एवं निजी दोनों ही विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की सभी क्षेत्रों में व्यावसायिक अभिरुचि समान स्तर की है।

शोध का शैक्षिक महत्व :–

प्रस्तुत शोध कार्य अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं अभिरूचि पर किया गया है । इस शोध से यह बात स्पष्ट होने की उम्मीद है, कि कौनसा घटक अध्यापकों की असंतुष्टि का कारण बनता है एवं उनकी अभिरूचि कौनसे क्षेत्र में है। यदि उनको अपनी रूचि के अनुसार कार्य करने का अवसर मिले तो वे अपनी योग्यता का राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है, क्योकि कोई व्यक्ति यदि दबाववश किसी व्यवसाय को अपनाता है, तो वह अपने व्यवसाय के साथ न्याय नहीं कर पाता है, लेकिन उसको व्यवसाय उसकी अभिरूचि के अनुसार मिले तो वह सच्ची निष्ठा एवं लगन के

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

साथ अपने कार्य को पूर्ण योग्यता के साथ करता है, और अपनी क्षमता को और बढ़ा सकता है।

इस अध्ययन का केन्द्र बिन्दु अध्यापक है। अतः इसकी उपयोगिता छात्रों की उपेक्षा अध्यापकों, प्रबंध समितियों एवं शिक्षा संस्थानों को अधिक है। अगर अध्यापक अपने व्यवसाय से संतुष्ट होगा तो निश्चय ही उसके मूल्य भी उच्च होगी और समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए उपयोगी होगा तथा छात्रों के भविष्य को उज्ज्वल बना सकेगा। अध्यापक ही विद्यालय संगठन का हृदय होता है। आज देश को अपने शिक्षकों से बहुत आशाऍं है, जो देश के नागरिकों का निमार्ण करते है। अध्यापक ही छात्रों के चरित्र के निर्माता है। शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट है या नहीं या अपने व्यवसाय के प्रति क्या अभिवृत्ति रखते है, वास्तव में उनकी अभिरूचि किस क्षेत्र में है यह जानना शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति एवं शिक्षा संबंधी योजना बनाने के लिए अत्यन्त आवश्यक है और वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है– राष्ट्र के निर्माण का कार्य शिक्षक के हाथों में है, अगर शिक्षक अपने शिक्षण व्यवसाय से संतुष्ट होगा तो वह अपना कार्य निश्चय ही सच्ची निष्ठा एवं लगन से करेगा और एक अच्छे राष्ट्र के निर्माण मे सहयोग दे सकेगा। प्रस्तुत शोध का निम्न क्षेत्रों में शैक्षिक निहितार्थो को इस प्रकार देख सकते है:–

1. प्रस्तुत शोध का किशोरावस्था में बालकों के व्यवसाय के चयन में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।
2. अध्यापकों की योग्यता के विकास में सरकार को सुझाव देकर उनकी योग्यता में उतरोतर वृद्धि की जा सकती है। जो राष्ट्र की उन्नति में सहयोग कर सकते है।
3. प्रस्तुत शोध भावी विद्यार्थियों के लिए द्वितीयक तथ्य के रूप में कार्य कर सकता है। और सहायक सामग्री के रूप में इसका उपयोग कर सकते है।
4. प्रस्तुत शोध का सम्बन्धित साहित्य के रूप में अध्ययन किया जा सकता है। और भावी शोध के लिए अध्ययन का बिन्दु भी लिया जा सकता है।
5. किसी अध्यापक की विशिष्ट व्यवसाय में ही अधिक रूचि क्यो है? को जानकर इन कारणों को समाप्त करने के उपायों को खोजा जा सकता है।
6. प्रस्तुत शोध का किसी व्यक्ति के व्यावसायिक क्षेत्र के चयन और भौगोलिक परिस्थितियों को जानने में भी महत्वपूर्ण योगदान है।

7. इस शोध के आधार पर जनसंख्यात्मक विशेषताओं एवं व्यावसायिक अभिरूचि के सम्बन्धों को भी जाना जा सकता है।
8. व्यावसायिक अभिरूचि के आधार पर अध्यापकों को सामाजिक एवं सास्क तिक तथ्यों को जाना जा सकता है।
9. छात्रों के परिवारिक वातावरण (एकाकी एवं संयुक्त) का उनकी व्यावसायिक अभिरूचि पर क्या प्रभाव पड़ता है ? आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक स्थिति मे क्या अर्न्तसम्बन्ध है, इसका भी हम प्रस्तुत शोध के आधार पर पता लगा सकते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Bibliography

S.N.	Writer	Book
1.	Advil SB. (1968)ed	: "Teacher Education in the United Kingdom, Garg Bras, Allahabad
2.	Best, John, w. 1970	: Research in Education, U.S.A. Prentice Hall Inc. Englewood Cliffs.
3.	Bingham, W.V.D.1937	: "Attitudes and Aptitude Testing" Newyork, Harper and Brass, 1937
4.	Brong, W.D. 1978	:"Educational Research an Introducation" Newyork Mcgrawhill Book Company, 708pp
5.	Brong, W.D. 1953	: "Methodology of Educational Research" Longmans Green and Company Newyork

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

6. Cook, P.M. 2007 : "Research Methods"
H.P. Bhargav Book
House 4/230 Kachehri Ghat Agra
28204, Thirteenth edition – 2007

7. Fedric L. Whitnee 1961: "The Eliments of Research"
Newyork Asea Publishing House

8. Garrett. H.E. 1969 : "Statistics in Psychology and Education"
Bombay, Vikils Feffers and Simons
Pvt. Ltd. 491pp

9. Goode, Carter, V. 1954 : "Methods of Research,
Newyork and Scates, D.E.
Appleton Century – Crafts Inc.

10. Goode, Barr and :"Methodology of Educational Research"
Newyork,Appleton-Century-Cofts.

11. Goode, W.J. and : "Methods of Social Research"
Hatt P.K. 1952 Newyork, McGraw Hill Book co. Inc.

12. Guilfor J.P.1956 : "Fundamental of Statistics in Psychology and Education"
Newyork McGraw Hill Book
Company 565 pp

13. Kerlinger, F.N. 1986 : "Foundation of Behavioral Research"
Newyork, Hatt Rinehart Winston, Inc.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

14. Morse,F.M. 1924 :"The Social Survey in Town and Countary Areas"

15. Rumal, Remarsh and Gej : "An Introducation of Measurement and Evaluation"

16. Super, Donald, E-and John : "Appraising Vocational Fitness" Delhi Universal Book Stall

First Indian Print O. Crites 1968

17. Townsend, J.C. 1953: Introducation to Experimental Methods"

Newyork McGraw. Hill Book Co.

18. Travers, Robert : "An Introducation to Educational Research"

Newyork TheMacmillan Company.

19. Young. P.V. 1988 : "Scientific Social and Survey Research",

New Delhi, Prentice Hall of India.

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सन्दर्भ – ग्रन्थ

1. अवस्थी, राजेन्द्र कुमार : 'प्राथमिक शाला स्तर की प्रशिक्षित अध्यापिकाओं की समस्याओं का अध्ययन''

एम.एड. लघु शोध, उदयपुर विश्वविद्यालय – 1975

2. चौधरी, सुषमा : ''माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर राजस्थान व हरियाणा के अध्यापक व अध्यापिकाओ की व्यावसायिक समस्याओं का अध्ययन'', एम.एड. लघु शोध, राजस्थान विश्वविद्यालय – 1974

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

3. दबे, शैली : ''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रति अभिवृति एवं अभिरूचि का अध्ययन'' एम.एम. लघु शोध, राजस्थान विश्वविद्यालय – 2007

4. शर्मा, प्रभारनी : ''प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के नये अध्यापकों की व्यावसायिक समस्याओं का अध्ययन'', एम.एड. लघु शोध, राजस्थान विशविद्यालय – 1978

5. सिंघवी, सुशीला : ''शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यापकों की व्यावसायिक समस्याओं का एक अध्ययन'', एम.एड. लघु शोध, उदयपुर विश्वविद्यालय

6. वर्मा, श्रीमती अनुराधा : ''माध्यमिक स्तर के निम्न निष्पति प्राप्त विद्यार्थियो के नैतिक मूल्यों व व्यावसायिक अभिरूचि का अध्ययन'', एम. एड. लघु शोध, राजस्थान विशविद्यालय – 2007

7. यादव, नवीन : ''अध्यापकों की अपने व्यवसाय में संतुष्टि एवं मूल्यों का अध्ययन'' एम.एड. लघु शोध, सरदारशहर विशविद्यालय – 2005

8. व्यास, कैलाश नाथ : ''निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन'', राजस्थान विश्वविद्यालय – 1967

<u>Research Surveys and Websites</u>

1. Buch, M.B. (1978-83): Third survey of research Education "N.C.E.R.T."- New Delhi

2. Buch, M.B (1983-83) :"Fourth Survey of Research in Education" Vol – 2, N.C.E.R.T., New Delhi

3. Buch, M.B (1988-1992) :"Fifth survey of Educational Research" Vol – 1 and Vol-2 N.C.E.R.T. New Delhi

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

4. Buch, M.B. (1992-2000) : "Sixth survey of Educational Research" Vol.-1, N.C.E.R.T., New Delhi

Websites

1. www.google.com
2. www.khoj.com
3. www.astalavista.com
4. www.eric.com
5. www.springerlink.com
6. www.tayler$francis.com
7. www.wickkipedia.com
8. www.jstore.com

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies